EXPLORING NEW POSSIBILITIES OF JAINOLOGICAL STUDIES

Prof. Nathan Katz of the Florida International University was the Chief Speaker at the Seminar. He has been appointed as Professor at the "Bhagwan Mahavir Professorship" of Jainological Studies at F. I. U.. Expressing his gratitude towards Acharya Shri Mahashramanji, the Disciplinarian at Jain Vishva Bharati University at Ladnun (Rajasthan), Prof. Katz said that the whole world needed today to get the knowledge of the high principles of Jainism such as non-violence, freedom from greed and peaceful co-existence called Anekant. He said that for that purpose they had established the Bhagwan Mahavir Professorship for Jain Studies at F. I. U., U. S. A., where thousands of students would get the opportunity to study Jainism. He said that Dalai Lama had visited F. I. U. twice and studies in Buddhism were already going on there. He said that the Jain studies would go a long way for comprehending even Buddhism and Hinduism. "In fact, Jainism is a valuable heritage for mankind and a gateway to Universal peace", he added. Prof. Katz also threw light on the future exchange programme between F. I. U at Miami, U. S. A. and Jain Vishva Bharati University at Ladnun, Rajasthan and envisaged new possibilities of Jainological Studies. He also said that an online programme would be started very soon for Jain studies.

Muni Mahendra Kumar, the Professor at Jain Vishva Bharati University and a versatile scholar of many disciplines, in his Key note address said that a new world-order based on non-violence & peace could be established through right dissemination, training and research in the applied philosophy found in Jainism by finding solution to the burning problems of the world. He said that an auspicious beginning in this direction had taken place by establishment of Bhagwan Mahavir Professorship at F. I. U.. Muniji expressed his hope that new possibilities would be explored at other Universities too, by such studies.

Muni Ajit Kumar and Muni Amrit Kumar presented an auspicious song in the beginning. Prof. Vinay Jain, Advisor, International School of Jain Studies, Prof. Kamla Jain, Associate of Philosophy Jesus Mary College, Delhi University, Prof. Vrishabh Prasad Jain, Consultant/Advisor, Association of Indian Universities, Dr. S. R. Bhatt, Former Prof. & Head of Department of philosophy, Delhi University, Dr. Sudeep Jain, Prof. & Dean Lal Bahadur Shastri, Sanskrit Vidya Peeth, New Delhi & R. P. Jain, Director, Motital Banarasi Das and many other educationist participated in the Seminar and presented their views. Muni Abhijeet Kumar aptly conducted the seminar which became successful on account of his scholarly efforts.

''एक्सप्लोरिंग न्यू पोसिबिलीटीज ऑफ जेनोलोजिकल स्टडीज''

आचार्यश्री महाश्रमण जी के आज्ञानुवर्ती एवं जैन विश्व भारती विश्वविद्यालय के मानद प्रोफेसर मुनिश्री महेन्द्र कुमार जी के सान्निध्य में दर्शन की विश्वव्यापी वर्तमानयुगीन उपयोगिता को मद्देनजर रखते हुए जैन ''विद्या–अध्ययन की नई संभावनाओं की खोज'' विषय पर एक अन्तर्राष्ट्रीय सेमिनार का आयोजन विद्या भारती स्कूल, सूर्यनगर में किया गया।

फ्लोरिडा इंटरनेशनल यूनिवर्सिटी के प्रो. नाथन काट्ज इस सेमिनार में मुख्य वक्ता थे। आप एफ.आई.यू. में भगवान महावीर प्रोफेसरशिप ऑफ जैन स्टडीज के संस्थापक है। प्रो. काट्ज ने कहा कि ''आज समस्त विश्व को जैन सिद्धान्तों से परिचित होना अपेक्षित है इसीलिए एफ.आई.यू. के हजारों विद्यार्थीयों में जैन सिद्धांतों के प्रसार की महत्त्वपूर्ण कुंजी के रूप में हमने भगवान महावीर प्रोफेसरशीप का शुभारंभ किया है। दलाईलामा दो बार हमारे विश्वविद्यालय में आ चुके हैं, और बुद्धिज्म का अध्ययन चल रहा है, लेकिन हमारा मानना है कि हम जैनिज्म को समझकर बुद्धिज्म और हिन्दुइज्म को और बेहतर तरीके से समझ सकते है। वास्तव में जैनिज्म हमारी महत्त्वपूर्ण विरासत है और शांतिपूर्ण सह–अस्तित्व का द्वार है।'' उन्होंने अपने विश्वविद्यालय और जैनविश्वभारती विश्वविद्यालय (लाडनूं, राजस्थान) के बीच आदान–प्रदान की संभावनाओं पर प्रकाश डाला। उन्होंने कहा कि एफ. आई.यू. शीघ्र ही जैनविद्या अध्ययन के लिए ऑनलाईन प्रोग्राम प्रारंभ करेंगे।

प्रो. काट्ज ने गत वर्षों में फ्लोरिडा विश्वविद्यालय में समणी चारित्र प्रज्ञाजी, समणी उन्नत प्रज्ञाजी एवं समणी चैतन्य प्रज्ञाजी द्वारा प्रदत्त सेवाओं को अनुपम बताते हुए कहा कि वे समणी जी की अध्यापन–शैली, उनकी श्रमशीलता एवं अहिंसात्मक जीवन–शैली से बहुत प्रभावित है। केम्पस के पूरे वातावरण में इसका सकारात्मक असर हो रहा है। एफ.आई.यू. शीघ्र ही जैनोलोजिकल स्टडीज पर एक ऑनलाईन प्रोग्राम शुरू करने जा रहा है। अतः जैन स्टडीज को वैश्विक रूप में लोकग्राही बनाने में आप सभी का तन–मन–धन से सहयोग हम आमंत्रित करते है।

कार्यक्रम का प्रारंभ मुनिश्री अजित कुमार एवं मुनिश्री अमृत कुमार के मंगलाचरण से हुआ। मुनिश्री अभिजित कुमार ने सधे हुए कुशल संचालन के साथ कार्यक्रम को आगे बढ़ाते हुए प्रो. मुनिश्री महेन्द्रकुमार जी एवं सेमिनार में उपस्थित सभी विद्वानों का परिचय प्रस्तुत किया। अपने वक्तव्य में उन्होंने आज की भाव भाषा में जैनदर्शन के प्रस्तुतीकरण को प्रासंगिक और अपेक्षित बताया।

प्रो. कमला जैन, प्रो. वी.पी.जैन प्रो. एस.आर. भट्ट, प्रो. विनय जैन, डॉ. अरूणा आनंद, श्री आर.पी. जैन आदि ने अपने रचनात्मक विचार प्रस्तुत किये।

अतिथियों का स्वागत आयोजक संस्था जैन श्वेताम्बर तेरापंथी सभा, शाहदरा के अध्यक्ष श्री शांतिलाल पटावरी ने किया। आभार ज्ञापन डॉ. कुसुम लूनिया ने किया। प्रो. नाथन काट्ज मुख्य वक्ता को प्रतीक चिन्ह भेंट श्री मांगीलाल सेठिया ने एवं साहित्य भेंट डॉ. धनपत लूनिया एवं भीकमचंद सुराणा ने किया। अनेक गणमान्य व्यक्ति, शिक्षाविद्, प्रोफेसर, प्रकाशक एवं सामाजिक कार्यकर्ताओं भी इस महत्त्वपूर्ण संगोष्ठी में उपस्थित थे।

प्रो. मुनि महेन्द्र कुमार ने अपने दिशा–निर्देशक वक्तव्य में कहा कि वर्तमान युगीन अनेक जागनिक समस्याओं का समाधान जैनविद्या के अन्तर्गत विकसित अनुप्रयोगात्मक फिलोसोफी में मौजूद हैं जिनके सम्यग् प्रचार–प्रसार, प्रशिक्षण एवं अनुसंधान द्वारा अहिंसा–शांति पर आधारित विश्व–व्यवस्था की स्थापना की जा सकती है। उन्होंने कहा कि जो कार्य फ्लोरिडा में प्रारंभ हुआ है, वह एक शुभ शुरुआत है। मुनिजी ने आशा व्यक्त की कि विश्व के अन्य विश्वविद्यालयों में भी जैन विद्या अध्ययन की नई संभावनाएं बनेगी।

प्रो. मुनिश्री महेन्द्र कुमार जी ने सभी विद्वानों को उद्बोधन देते हुए एफ.आई.यू. के प्रयासों की सराहना की। जैनोलॉजी के क्षेत्र में और अधिक कार्य की प्रेरणा देते हुए आपने कहा कि जैनिज्म की विश्वव्यापी पहचान अपेक्षित है। इस काम में जैन समुदाय का सक्रिय सहयोग होना चाहिए। ऑनलाईन शिक्षा पद्धति भी एक बेहतर तरीका है।

मुनिश्री ने आगे कहा कि मानव जीवन को लोभ, लालच, तनाव, हिंसा, आंतक व युद्ध की विसंगतियों से बचाने और उसका अधिकाधिक आध्यात्मिक उत्थान हेतु शारीरिक, मस्तिष्कीय एवं चेतना के रूपांतरण का प्रशिक्षण दिया जाना चाहिए। इस प्रकार निष्कर्षतः कहा जा सकता है कि जैन–दर्शन के महान सिद्धांतों एवं मूल्यों के व्याहारीकरण को स्पष्ट करते हुए पूरे विश्व के युवाओं को ग्लोबल रूप से आकर्षित किया जाये। ताकि उच्च युवाओं के जीवन में भी जैनोलोजिकल स्टडीज से सकारात्मक क्रांति घटित हो सके।

इस प्रकार प्रो. मुनि महेन्द्रकुमार जी के प्रभावी दिशा निर्देशन, प्रो. नाथन काट्ज के प्रयोगत्मक दृष्टिकोण एवं उपस्थित सभी विद्वानों के रचनात्मक विचारों के साथ वर्तमान सन्दर्भ में जैनोलोजिकल स्टडीज की नयी संभावनाओं के नये आयामों को इस सेमिनार में अवकाश प्राप्त हुआ।

प्रो. कमला जैन, प्रो. दर्शन शास्त्र, जीजस मेरी स्कूल, दिल्ली विश्वविद्यालय,, प्रो. वी.पी. जैन, सलाहकार, एसोशियेशन ऑफ इंडियन यूनिवर्सिटीज प्रो. एस.आर. भट्ट, भूतपूर्व विभागाध्यक्ष दर्शन शास्त्र, दिल्ली विश्व विद्यालय, प्रो. विनय जैन, सलाहकार इन्टरनेशनल स्कूल ऑफ जैन स्टडीज, डॉ. अरूणा आनंद, श्री आर.पी.जैन, निदेशक, मोतीलाल बनारसीदास प्रकाशक, डॉ. सुदीप जैन, प्रो. एवं विभागाध्यक्ष लाल बहादुर शास्त्री संस्कृत विद्यापीठ नई दिल्ली आदि ने अपने रचनात्मक विचार प्रस्तुत किये।

अमरीका के विश्वविद्यालयों में जैन विद्या अध्ययन के प्रति आकर्षण बढ़ रहा है।

प्रो. नाथन काट्ज

आचार्यश्री महाश्रमण जी के आज्ञानुवर्ती एवं जैन विश्व भारती विश्वविद्यालय के मानद प्रोफेसर मुनिश्री महेन्द्र कुमार जी के सान्निध्य में जैन दर्शन की विश्वव्यापी वर्तमानयुगीन उपयोगिता को मद्देनजर रखते हुए ''जैनविद्या–अध्ययन की नई संभावनाओं की खोज '' विषय पर एक अन्तर्राष्ट्रीय सेमिनार का आयोजन विद्या भारती स्कूल, सूर्यनगर में किया गया।

फ्लोरिडा इंटरनेशनल यूनिवर्सिटी के प्रो. नाथन काट्ज इस सेमिनार में मुख्य वक्ता थे। आप एफ.आई.यू. में भगवान महावीर प्रोफेसरशिप ऑफ जैन स्टडीज के संस्थापक है। प्रो. काट्ज ने कहा कि ''आज समस्त विश्व को जैन सिद्धान्तों से परिचित होना अपेक्षित है इसीलिए एफ.आई.यू. के हजारों विद्यार्थीयों में जैन सिद्धांतों के प्रसार की महत्त्वपूर्ण कुंजी के रूप में हमने भगवान महावीर प्रोफेसरशीप का शुभारंभ किया है। दलाईलामा दो बार हमारे विश्वविद्यालय में आ चुके हैं, और बुद्धिज्म का अध्ययन चल रहा है, लेकिन हमारा मानना है कि हम जैनिज्म को समझकर बुद्धिज्म और हिन्दुइज्म को और बेहतर तरीके से समझ सकते है। वास्तव में जैनिज्म हमारी महत्त्वपूर्ण विरासत है और शांतिपूर्ण सह–अस्तित्व का द्वार है।'' उन्होंने अपने विश्वविद्यालय और जैनविश्वभारती विश्वविद्यालय (लाडनूं, राजस्थान) के बीच आदान–प्रदान की संभावनाओं पर प्रकाश डाला। उन्होंने कहा कि एफ. आई.यू. शीघ्र ही जैनविद्या अध्ययन के लिए ऑनलाईन प्रोग्राम प्रारंभ करेंगे।

प्रो. मुनि महेन्द्रकुमार ने अपने दिशा–निर्देशक वक्तव्य में कहा कि वर्तमान युगीन अनेक जागतिक समस्याओं का समाधान जैनविद्या के अन्तर्गत विकसित अनुप्रयोगात्मक फिलोसोफी में मौजूद हैं जिनके सम्यग् प्रचार–प्रसार, प्रशिक्षण एवं अनुसंधान द्वारा अहिंसा–शांति पर आधारित विश्व–व्यवस्था की स्थापना की जा सकती है। उन्होंने कहा कि जो कार्य फ्लोरिडा में प्रारंभ हुआ है, वह एक शुभ शुरूआत है। मुनिजी ने आशा व्यक्त की कि विश्व के अन्य विश्वविद्यालयों में भी जैन विद्या अध्ययन की नई संभावनाएं बनेगी।

कार्यक्रम का प्रारंभ मुनिश्री अजित कुमार एवं मुनिश्री अमृत कुमार के मंगलाचरण से हुआ। मुनिश्री अभिजित कुमार ने सधे हुए कुशल संचालन के साथ कार्यक्रम को आगे बढ़ाते हुए प्रो. मुनिश्री महेन्द्रकुमार जी एवं सेमिनार में उपस्थित सभी विद्वानों का परिचय प्रस्तुत किया। अपने वक्तव्य में उन्होंने आज की भाव भाषा में जैनदर्शन के प्रस्तुतीकरण को प्रासंगिक और अपेक्षित बताया।

The Effect of the Jain System of Preksha Meditation on Human Brain Proved Scientifically

New Delhi ……………

Prof. Muni Mahendra Kumar, the renowned Jain saint scientifically explained the effect of Preksha Meditation on human brain and proved that it was effective in bringing about the desirable change in the behaviour through bio-chemical transformation responsible for destructive emotions. He was speaking in the five-days “International Conference on Contemplative Sciences” organized here at India Habitat Centre by Mind and Life Institute, U. S. A., headed by Dalai Lama. There was a dialogue between eminent scientists from all over the world and the meditation practitioners of the Jain, Buddhist, Vedanta and Yoga philosophy. Prof. Muni Mahendra Kumar who is a versatile scholar of many branches of knowledge including modern sciences and ancient philosophies, in his presentation, consistently showed how human consciousness at the subtlest level effected the grosser phenomena taking place in the brain. He explained that the Jain contemplative practices like perception of psychic colours at the psychic centres, co-related with the endocrine glands and the limbic system, could bring about the inhibition of the destructive passions like anger, hate etc., and result in total self-transmutation. He also gave in brief the archaeological and historical evidence in favour of the Jain practices, together with its complete metaphysical basis.

Mr. Arun Zaveri, an expert exponent and practitioner of Preksha Meditation System, made the power point presentation depicting the exact neuro-scientific changes. A complete account of the recent success stories on empirical basis was also given. It proved the efficacy of the Jain practices by curing more than 20000 heart patients suffering from coronary heart disease by reversing the risk factors, under strict vigilance of Dr. S. C. Manchanda, the former Head & Professor of Cardiac Department of AIIMS, New Delhi.

The scientific researchers also corroborated the effect of Preksha Meditation in the field of education, where through empirical evidence involving measurement through Electro-encephalogram, Electro-cardiogram, Electro-myogram etc., it was shown that the overall development of the physical, intellectual, mental and emotional aspects had taken place. In the same way, it was proved successful in the sociological and psychological fields, solving the problems of intoxicants, juvenile delinquency, domestic violence, crimes etc..

It was claimed that a successful experiment was carried out in the Naxalite areas of Bihar and Jharkhand by bringing about a non-violent socio-economic revolution through training in non-violence based on the Jain practices, coupled with proper training in self-employment techniques.

Prof. Muni Mahendra Kumar appealed to the participant-scientists to collaborate with the researches working at the Jain Vishva Bharati University at Ladnun (Rajasthan) to show the pragmatic values of the applications of the Preksha Meditation, Science of Living, Training in non-violence etc., in mitigating the problems in the fields of Health, Education, Sociology, Psychology, Socio-economic etc., and ultimately get success in overcoming violence, aggressiveness, cruelty, deceitfulness, selfishness etc., and establishing a world order based on permanent peace.

The participants included Dalai Lama, Dr. Richard Davidson, University of Wisconsin, Madison, Dr. John Dunne, Emory University, Dr. Daniel Goleman, Psychologist, Author, Dr. P N Tondon, President, National Brain Research Centre, Haryana, India, Dr. Kapila Vatsyayan, MP Rajya Sabha, Former Secretary, Department of Arts , Ministry of HRD. Dalai Lama himself very much appreciated the work done in the field of Jain contemplative practices and was highly impressed by Munishri’s presentation.

प्रेक्ष्याध्यान के मनुष्य पर होने वाले प्रभावों के वैज्ञानिक प्रमाणों की प्रस्तुति

यहां ''इण्डिया हैबीटेट सेंटर'' में आयोजित पंचदिवसीय अन्तराष्ट्रीय सम्मेलन में जैन, बौध, वेदान्त एवं योग दर्शन में प्रतिपादित ध्यान–पद्धतियों के वैज्ञानिक अध्ययन में विश्व–विख्यात वैज्ञानिकों एवं ध्यानसाधकों के बीच हुए संवाद से यह स्पष्ट सिद्ध हो गया है कि मनुष्य के मस्तिष्कीय परिवर्तत एवं व्यवहार–परिष्कार में ध्यान की अहम भूमिका है। इस सम्मेलन का आयोजन माइंड एण्ड लाइफ इन्स्टीट्यूट, यू. एस. ए. द्वारा किया गया था। इस संस्थान के अध्यक्ष दलाई लामा है।

जैन ध्यान पद्धति पर वैज्ञानिक दृष्टि से प्रकाश डालते हुए आचार्य महाश्रमण के आज्ञानुवर्ती प्रो. मुनि महेन्द्र कुमार ने बताया कि किस प्रकार प्रेक्षाध्यान के द्वारा चेतना के सूक्ष्म स्तरों पर परिवर्तत घटित कर मनुष्य की उन मस्तिष्कीय प्रक्रियाओं में परिष्कार किया जा सकता है जो मनुष्य के नकारात्मक संवेगों एवं व्यवहारों के लिए जिम्मेवार है। उन्होंने जैन साधना पद्धति में प्राचीन काल से प्रचलित विभिन्न प्रकार के अभ्यासों पर विस्तार से प्रकाश डाला तथा बताया कि कैसे न्यूरोसाइन्स की आधुनिक अवधारणाओं के साथ इनकी संगति बैठ सकती है।

श्री दलाई लामा सहित उपस्थित अन्य सभी पंरपराओं के साधक विद्वान तथा विदेषी एवं भारतीय वैज्ञानिकों ने प्रेक्षाध्यान के विशय में की गई इस प्रस्तुति की मुक्त कंठ से प्रशंसा की। श्री दलाई लामा ने कहा–''मैं इस प्रस्तुति से अत्यंत प्रभावित हुआ हूॅं। अन्य वैज्ञानिकों ने भी इसी प्रकार प्रेक्षाध्यान की विभिन्न प्रक्रियाओं के महत्त्वपूर्ण वैज्ञानिक स्वरूप को बहुत ही पसंद किया। युवासंत मुनिश्री अभिजीत कुमारजी ने संभागी वैज्ञानिकों के साथ व्यक्तिशः सम्पर्क स्थापित किया तथा प्रेक्षाध्यान के विषय में वैज्ञानिक आधारों पर चर्चा की।

संभागियों में श्री दलाई लामा, डॉ. रिचर्ड डेविडसन, पी.एच.डी. हावर्ड विश्वविद्यालय, डॉ. जॉन डून, एमोरी विश्वविद्यालय, डॉ. डेनियल गोलमेन, मनोवैज्ञानिक एवं प्रख्यात लेखक, डॉ. पी.एन. टण्डन, नेशनल ब्रेन रिसर्च सेंटर, हरियाणा, डॉ. कपिला वात्स्यायन, एम.पी. राज्य सभा, के नाम विशेषतः उल्लेखनीय हैं।